International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उरांव जनजाति के लोकगीत: संचार के परंपरागत माध्यम का अध्ययन

(जशपुर जिले के छिपतला गाँव के विशेष संदर्भ में)

विकाश कुमार[1], डॉ. आशुतोष मंडावी[2]

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर

सारांश (Abstract):

यह शोध-पत्र छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के बगीचा ब्लॉक के अंतर्गत छिपतला गाँव के विशेष संदर्भ में उरांव जनजाति के लोकगीतों का 'पारंपरिक संचार माध्यम' के रूप में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। द्रविड़ भाषा-परिवार से संबंधित कुडुख भाषी उरांव जनजाति छत्तीसगढ़ के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में प्रमुखता से निवास करती है। प्रस्तुत अध्ययन में उरांव समाज के विभिन्न लोकगीतों—संस्कार गीत (जन्म, विवाह, मृत्यु), पर्व गीत (कर्मा, जावा), श्रम गीत (रोपनी, धान कूटनी) तथा सामाजिक संदेश गीतों की पहचान कर उनके संचारी महत्व का मूल्यांकन किया गया है। शोध के लिए प्राथमिक आंकड़ों का संकलन छिपतला गाँव में एक विवाह समारोह के प्रत्यक्ष अवलोकन (Participant Observation) तथा स्थानीय निवासियों से गहन साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि आधुनिक जनसंचार माध्यमों एवं धार्मिक परिवर्तनों (ईसाई धर्म का प्रभाव) के बावजूद उरांव समाज ने अपनी पारंपरिक संचारी विरासत को जीवंत रखा है, जिसमें 'धुमकुड़िया' (युवागृह) जैसी पारंपरिक संस्थाएं केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): उरांव जनजाति, लोक संचार, लोकगीत, छत्तीसगढ़, जशपुर, छिपतला गाँव, संस्कार गीत, कर्मा त्योहार, धुमकुड़िया (युवागृह)

1. प्रस्तावना / परिचय (Introduction)

संचार मानव सभ्यता की आधारशिला है। यह केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं, बल्कि किसी भी समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों एवं ऐतिहासिक अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी है। जनजातीय समाजों में यह संचार व्यवस्था मुख्यधारा के आधुनिक माध्यमों से भिन्न, अधिक सहभागितापूर्ण एवं समुदाय-केंद्रित होती है। लोक संचार की यह परंपरा जनजातीय जीवन के प्रत्येक पक्ष में व्याप्त है - चाहे वह श्रम हो, उत्सव हो, संस्कार हो या सामाजिक विधान।

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी समृद्ध जनजातीय विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ विभिन्न जनजातीय समूह निवास करते हैं, जिनमें उरांव (जिन्हें कुड़ुख या ओराओं भी कहा जाता है) प्रमुख हैं। उरांव जनजाति द्रविड़ भाषा-परिवार से संबंध रखती है और इनकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। छत्तीसगढ़ के उरांव समुदाय ने सदियों से अपनी लोक परंपराओं को मौखिक रूप से संजोए रखा है, जिनमें लोकगीत संचार का सबसे प्रभावी माध्यम रहे हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र उरांव जनजाति के लोकगीतों को संचार के परंपरागत माध्यम के रूप में विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से जशपुर जिले के बगीचा ब्लॉक में स्थित छिपतला गाँव में किए गए क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित

है। इस गाँव में एक विवाह समारोह के अवसर पर किए गए अवलोकन एवं स्थानीय निवासियों से बातचीत के आधार पर यह शोध-पत्र उरांव समाज में लोकगीतों के संचारी महत्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है।

2. उरांव जनजातिः सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

2.1. उत्पत्ति एवं इतिहास

उरांव जनजाति छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियों में से एक है। भाषाई दृष्टि से उरांव द्रविड़ भाषा-परिवार से संबंधित हैं और इनकी मातृभाषा 'कुड़ुख' है। ऐतिहासिक दृष्टि से उरांवों का मूल निवास स्थान दक्षिण भारत माना जाता है। विभिन्न कालखंडों में हुए प्रवासन के कारण ये छत्तीसगढ़ सहित विभिन्न राज्यों में फैले। उरांव जनजाति के लोग छत्तीसगढ़ के अलावा झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, असम और महाराष्ट्र में भी फैले हुए हैं।

2.2. छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति

छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति के लोग मुख्यतः सरगुजा, जशपुर, रायगढ़ एवं कोरबा जिलों में निवास करते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार, इस जनजाति की संख्या लगभग 11 लाख थी, जिसमें से 22.24 प्रतिशत लोग शहरों में एवं 77.76 प्रतिशत लोग गाँवों में निवास करते हैं। उरांव जनजाति को स्थानीय स्तर पर 'धनगर' या 'खेत मजदूर' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि ये मुख्यतः कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर हैं। छत्तीसगढ़ की अन्य जनजातियों की तुलना में उरांव जनजाति की साक्षरता दर सबसे ऊपर है, जो इसे राज्य की सबसे शिक्षित जनजाति बनाती है।

2.3. सामाजिक संरचना

उरांव समाज की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना है। यह समाज अनेक गोत्रों में विभाजित है और गोत्र के भीतर वैवाहिक संबंध वर्जित होते हैं। प्रत्येक गोत्र का अपना विशिष्ट चिन्ह होता है। प्रत्येक उरांव ग्राम की अपनी स्वतंत्र व्यवस्था होती है, जिसमें राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था का दायित्व 'महतो' के पास होता है, जबकि धार्मिक व्यवस्था का दायित्व 'पाहन' (पुजारी) के पास होता है।

2.4. युवागृह परंपरा (धुमकुड़िया)

अन्य जनजातियों की भाँति उरांव समाज में भी युवा गृह की परंपरा है, जिसे 'धुमकुड़िया' कहा जाता है। इस युवा गृह के पुरुष प्रमुख को 'धनगर' एवं महिला प्रमुख को 'धनगिन' से संबोधित किया जाता है। यह स्थान युवाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रशिक्षण का केंद्र होता है, जहाँ वे पारंपरिक गीत-नृत्य की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह संस्था अंतःपीढ़ीगत संचार और सांस्कृतिक धरोहर के हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2.5. धार्मिक आस्था

उरांव जनजाति मूलतः प्रकृति पूजक है। इनके प्रमुख देवता सूर्य देव हैं, जिन्हें 'धरमेश' या 'धर्मेश' कहा जाता है। इनकी प्रमुख देवी 'सरना देवी' हैं, जिनका निवास स्थान सराय वृक्ष (साल वृक्ष) माना जाता है। वर्तमान में उरांव जनजाति के अधिकांश लोग ईसाई धर्म को अपना चुके हैं, फिर भी वे अपनी पारंपरिक गतिविधियों एवं रीति-रिवाजों का अनुसरण आज भी जीवंत रूप से करते हैं।

3. लोक संचार: अवधारणा एवं स्वरूप

3.1. लोक संचार की अवधारणा

लोक संचार का तात्पर्य उन पारंपरिक माध्यमों से है जो जनसमुदाय द्वारा निर्मित और प्रयोग किए जाते हैं। ये माध्यम मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा, सूचना और सामाजिक नियंत्रण का कार्य भी करते हैं। लोक संचार के प्रमुख अंग हैं - लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, अनुष्ठान आदि।

3.2. जनजातीय समाजों में लोक संचार की विशेषताएँ

जनजातीय समाजों में लोक संचार की निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं:

- **सहभागितापूर्ण प्रक्रिया:** यह एकतरफा संचार नहीं, बल्कि सामूहिक सहभागिता और द्वि-मार्गी संवाद पर आधारित होता है।
- **मौखिक परंपरा:** इसका आधार पूर्णतः मौखिकता है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी श्रुति और स्मृति के माध्यम से हस्तांतरित होती है।
- **जीवन से जुड़ाव:** यह संचार जनजातीय जीवन के प्रत्येक पक्ष - जन्म, विवाह, मृत्यु, कृषि, ऋतु परिवर्तन आदि से अभिन्न रूप से जुड़ा होता है।
- **सांस्कृतिक अस्मिता का वाहक:** यह समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक प्रतिमानों को सुरक्षित रखने में सहायक होता है।

4. उरांव लोकगीत: संचार के परंपरागत माध्यम के रूप में

उरांव जनजाति के लोकगीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संचार के सशक्त माध्यम हैं। इनके माध्यम से उरांव समाज अपने इतिहास, परंपराओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक मूल्यों और धार्मिक विश्वासों को संप्रेषित करता है। उरांव लोकगीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है:

4.1. संस्कार गीत (Lifecycle Ritual Songs)

- **जन्म संस्कार गीत:** बच्चे के जन्म पर विशेष गीत गाए जाते हैं, जिनमें परिवार में नए सदस्य के आगमन की खुशी व्यक्त की जाती है। ये गीत न केवल खुशी की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि बच्चे के भविष्य के लिए शुभकामनाओं का संचार भी करते हैं। बच्चे के जन्म के आठवें या दसवें दिन नामकरण संस्कार होता है, जिसमें बच्चे का नाम उनके पूर्वजों के नाम पर रखा जाता है। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में पूर्वजों का आह्वान एवं आशीर्वाद की कामना होती है।
- **विवाह गीत:** उरांव समाज में विवाह से जुड़े गीतों की एक लंबी परंपरा है। ये गीत विवाह के विभिन्न चरणों - मंगनी, हल्दी, विदाई आदि से जुड़े होते हैं। इनके माध्यम से सामाजिक मूल्यों, नाते-रिश्तों और वैवाहिक संबंधों के महत्व का संचार होता है। उरांव समाज में दहेज प्रथा नहीं है, अपितु 'सिंदूर प्रथा' प्रचलित है, जिसमें रिश्ता तय होने पर लड़के एवं लड़की के माता-पिता एक-दूसरे को सिंदूर लगाते हैं। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में इस रस्म का विस्तार से वर्णन होता है।

- **मृत्यु संस्कार गीत:** उरांव समाज में मृत्यु संस्कार से जुड़े गीत भी प्रचलित हैं। उरांव समाज के लोग मृतक को दफनाते हैं। अंत्येष्टि के समय गाए जाने वाले गीतों में मृतक के प्रति श्रद्धांजलि एवं उनकी आत्मा की शांति की कामना होती है। विशेष बात यह है कि उरांव समाज में बहू द्वारा ससुर की अस्थियों का विसर्जन किया जाता है, जो इस समाज में महिलाओं के उच्च स्थान और सामाजिक अधिकारों को दर्शाता है।

4.2. ऋतु एवं पर्व गीत

- **कर्मा गीत:** कर्मा उरांव जनजाति का प्रमुख त्योहार है। भादो मास की शुक्ल पक्ष एकादशी को मनाए जाने वाले इस पर्व में विशेष गीत गाए जाते हैं। कर्मा के गीतों में प्रकृति पूजा, उर्वरता और समृद्धि की कामना व्यक्त होती है। ये गीत पूरी रात चलने वाले सामूहिक नृत्य के दौरान गाए जाते हैं, जो सामुदायिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। त्योहार की शुरुआत गाँव के लोगों द्वारा एकत्रित होकर कर्म देवता को लाने से होती है। गाँव का युवक कर्म वृक्ष की तीन डालियाँ काटता है, जिनके अगले छोर बराबर होते हैं। इन डालियों को गाँव के अखाड़े में स्थापित किया जाता है। इसके बाद कर्म देवता की कहानी सुनाई जाती है और फिर उपासिकाएँ हाथ में लिंडा एवं पन्ना के पौधे लेकर रातभर नाचती-गाती हैं।

- **जावा गीत:** जावा त्योहार भी उरांव समाज का महत्वपूर्ण पर्व है, जो वसंत ऋतु में मनाया जाता है। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में प्रकृति के जागरण एवं नवजीवन का उल्लास व्यक्त होता है।

4.3. श्रम गीत (Occupational Songs)

- **रोपनी गीत:** धान की रोपाई के समय महिलाएँ विशेष गीत गाती हैं। ये गीत श्रम की एकरसता को दूर करने के साथ-साथ सामूहिक श्रम में समन्वय स्थापित करते हैं। इन गीतों में धान की फसल की समृद्धि एवं अच्छी वर्षा की कामना होती है।

- **धान कूटनी गीत:** धान कूटने के समय गाए जाने वाले ये गीत अत्यधिक लयबद्ध होते हैं और श्रम को सुगम बनाते हैं। इन गीतों की लय उखली एवं मूसल की गति से मेल खाती है।

- **शिकार गीत:** उरांव पारंपरिक रूप से शिकार पर निर्भर रहे हैं। शिकार पर जाते समय एवं शिकार से लौटने पर विशेष गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में वन एवं वन्य जीवों के प्रति कृतज्ञता एवं सम्मान व्यक्त होता है।

4.4. सामाजिक संदेश गीत

- **नैतिक शिक्षा गीत:** इन गीतों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों - सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार आदि का संचार होता है। ये गीत युवा पीढ़ी को समाज के आदर्शों से परिचित कराते हैं।

- **व्यंग्य गीत:** कुछ गीत सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य करते हैं और समाज को सुधार का संदेश देते हैं। ये गीत अन्याय, शोषण एवं सामाजिक विसंगतियों के प्रति जागरूकता पैदा करते हैं।

5. क्षेत्र अध्ययन / केस स्टडी: जशपुर जिले का छिपतला गाँव

5.1. भौगोलिक एवं सामाजिक परिदृश्य

जशपुर जिला छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित है, जो झारखंड एवं उड़ीसा की सीमा से सटा हुआ है। यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी एवं वनाच्छादित है। आजादी से पूर्व जशपुर एक समृद्ध रियासत हुआ करता था। बगीचा ब्लॉक के छिपतला गाँव में यह अध्ययन किया गया। यह गाँव अपनी प्राकृतिक सुंदरता एवं पारंपरिक उरांव संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ के मकान पारंपरिक उरांव शैली में निर्मित हैं - त्रिकोणीय छाजन वाले, मिट्टी के कोठे एवं बाँस-खपरैल से निर्मित छतें। गाँव के मध्य में स्थित सेंट ज़ेवियर चर्च इस बात का प्रतीक है कि यहाँ के अधिकांश उरांव लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया है, फिर भी वे अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक गतिविधियों को आज भी जीवंत रखे हुए हैं।

5.2. विवाह समारोह: एक प्रत्यक्ष अवलोकन

इस केस स्टडी के दौरान छिपतला गाँव में एक विवाह समारोह में शामिल होने का अवसर मिला। यह समारोह उरांव जनजाति की पारंपरिक विवाह प्रथा को समझने का एक उत्कृष्ट अवसर था।

- **स्वागत द्वार:** विवाह समारोह के दौरान सबसे पहले आकर्षण का केंद्र भव्य स्वागत द्वार था। इस द्वार को पेड़ के बड़े-बड़े खंभों से बनाया गया था, जिन पर झंडे लगे हुए थे। यह जशपुर क्षेत्र की विशेष परंपरा है। मुख्य द्वार पर सबसे बड़ा पेड़ एवं झंडा लगाया गया था, जबकि चारों ओर छोटे-छोटे पेड़ एवं झंडे लगाए गए थे। यह द्वार उरांव समाज की वास्तुकला कौशल एवं सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक था।

- **पारंपरिक रस्में:** विवाह के दौरान विभिन्न पारंपरिक रस्में निभाई गईं। हल्दी रस्म के दौरान विशेष गीत गाए गए, जिनमें वर-वधू को आशीर्वाद दिया गया। जिस सिल पर हल्दी पिसी गई थी, उसे सिर पर उठाकर मंडप में लगे खंभे के चक्कर लगाए गए। विवाह मंडप में सूखी हुई तीन घास की गड्डियाँ रखी गईं, जिन्हें लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती का प्रतीक माना गया। इन घास के ढेरों पर हल्का जुआ रखा गया, जिस पर हल्दी वाली सिल एवं लोटा रखा गया। यह सिल पार्वती का प्रतीक थी। विवाह की मुख्य रस्म में लड़का सिर पर खड़ा हुआ और लड़की जमीन पर खड़ी थी। लड़की के भाई ने लड़की के हाथ से सिंदूर लेकर लड़के को लगाया और इस प्रकार विवाह संपन्न हुआ।

- **विवाह गीत:** विवाह के दौरान विभिन्न अवसरों पर गीत गाए गए। इन गीतों को मुख्यतः महिलाओं द्वारा गाया गया, जो समूह में बैठकर गीत गा रही थीं। ये गीत कुड़ुख भाषा में थे और इनके बोल परंपरा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते आ रहे हैं। विशेष बात यह थी कि इन गीतों में न केवल विवाह की खुशी व्यक्त हो रही थी, बल्कि वर-वधू को गृहस्थ जीवन के लिए आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ भी दी जा रही थीं।

- **पारंपरिक भोजन:** विवाह समारोह के दौरान पारंपरिक व्यंजन परोसे गए। इसमें मुख्य रूप से चावल, दाल, सब्जी एवं मांसाहारी व्यंजन शामिल थे। विशेष बात यह थी कि भोजन पारंपरिक विधि से पकाया गया था और पत्तलों में परोसा गया।

5.3. पारंपरिक आवास की संरचना

छिपतला गाँव में पारंपरिक उरांव आवास की संरचना को देखने का अवसर मिला। एक विशिष्ट उरांव घर की संरचना निम्न प्रकार होती है:

- **आंगन:** घर में प्रवेश करते ही एक विस्तृत आंगन होता है, जहाँ परिवार के लोग बैठते हैं एवं दैनिक कार्य करते हैं।

- **देवता स्थान:** आंगन में ही एक विशेष स्थान पर देवताओं की स्थापना होती है। प्रवेश करते समय सबसे पहले इसी स्थान को नमन किया जाता है।
- **कोठा (केंद्रीय कक्ष):** घर का सबसे महत्वपूर्ण भाग केंद्रीय कक्ष होता है, जिसे 'कोठा' कहा जाता है। यह कक्ष मिट्टी से निर्मित होता है और इसके ऊपर छप्पर या खपरैल की छत होती है। यह कक्ष घर के बीचों-बीच स्थित होता है और परिवार के सभी सदस्य इसके चारों ओर विभिन्न कक्षों में निवास करते हैं।
- **चारों ओर के कक्ष:** केंद्रीय कक्ष के चारों ओर अलग-अलग कक्ष बने होते हैं, जो परिवार के विभिन्न सदस्यों के रहने के लिए होते हैं। इन कक्षों की छतें भी अलग-अलग होती हैं।

यह वास्तुकला उरांव समाज की सामूहिकता एवं परिवार केंद्रित जीवन शैली का प्रतीक है। केंद्रीय कक्ष परिवार की एकता का प्रतीक है, जबकि चारों ओर के अलग-अलग कक्ष व्यक्तिगत स्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

5.4. ग्रामीणों से बातचीत के मुख्य बिंदु

गाँव में स्थानीय निवासी कुलदीप भाई एवं अन्य ग्रामीणों से बातचीत के आधार पर निम्नलिखित बिंदु सामने आए:

- **पारंपरिक भाषा का संरक्षण:** उरांव समुदाय के लोग आज भी आपस में कुड़ुख भाषा में बातचीत करते हैं, हालाँकि युवा पीढ़ी हिंदी एवं स्थानीय भाषाओं का भी प्रयोग करती है।
- **ईसाई धर्म एवं पारंपरिक संस्कृति का सह-अस्तित्व:** गाँव में सेंट ज़ेवियर चर्च की उपस्थिति के बावजूद, लोगों ने अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक गतिविधियों - गीत, नृत्य, त्योहार आदि को नहीं छोड़ा है।
- **युवा पीढ़ी में परिवर्तन:** शिक्षा के प्रसार एवं आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी में पारंपरिक लोकगीतों के प्रति रुचि कम हो रही है।
- **परंपरा संरक्षण के प्रयास:** कुछ स्थानीय संगठन एवं बुजुर्ग उरांव लोकगीतों एवं परंपराओं को संरक्षित करने के प्रयास में लगे हैं।

6. उरांव लोकगीतों के संचारी आयामों का विश्लेषण

6.1. सूचना संचार का माध्यम

आधुनिक संचार माध्यमों के अभाव में उरांव समाज में लोकगीत सूचना प्रसार के महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। विवाह, श्राद्ध, त्योहार जैसे सामाजिक आयोजनों की सूचना अक्सर गीतों के माध्यम से दी जाती थी। ये गीत सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों की जानकारी समुदाय तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। छिपतला गाँव के विवाह समारोह में देखा गया कि गीतों के माध्यम से ही विवाह के विभिन्न चरणों की जानकारी समुदाय तक पहुँच रही थी। हल्दी गीत, मंडप स्थापना गीत, विवाह गीत - सभी इस बात के सूचक थे कि विवाह का कौन-सा चरण चल रहा है।

6.2. सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण

लोकगीत उरांव समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम हैं। इनके माध्यम से समाज के आदर्शों, परंपराओं और रीति-रिवाजों का संरक्षण होता है। उदाहरण के लिए, विवाह गीतों के माध्यम से वैवाहिक संबंधों के

महत्व, पति-पत्नी के कर्तव्यों, सास-ससुर के प्रति सम्मान आदि का संचार होता है। कर्मा गीतों के माध्यम से प्रकृति के प्रति आस्था एवं कृतज्ञता व्यक्त होती है।

6.3. सामुदायिक एकता का निर्माण

लोकगीत सामूहिक रूप से गाए जाते हैं, जो सामुदायिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। कर्मा, जावा आदि त्योहारों पर सामूहिक नृत्य-गीत के दौरान पूरा समुदाय एक साथ होता है। यह सामूहिकता उरांव समाज की सामाजिक संरचना को मजबूती प्रदान करती है। छिपतला गाँव के विवाह समारोह में यह स्पष्ट देखा गया कि विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों एवं पूरे समुदाय का उत्सव होता है। गीत-नृत्य के माध्यम से पूरा गाँव इस उत्सव में सहभागी होता है।

6.4. भावनात्मक अभिव्यक्ति का साधन

लोकगीत उरांव समाज की भावनात्मक अभिव्यक्ति के सशक्त साधन हैं। प्रेम, विरह, खुशी, दुख, आशा, निराशा - सभी भावनाओं को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। विशेषकर विवाह के विदाई गीतों में परिवार और सगे-संबंधियों की भावनाएँ मार्मिक रूप से व्यक्त होती हैं।

6.5. ऐतिहासिक चेतना का वाहक

उरांव समाज का इतिहास मौखिक परंपरा पर आधारित है। विभिन्न ऐतिहासिक घटनाएँ, वीरों की गाथाएँ, प्रवासन की कथाएँ लोकगीतों में सुरक्षित हैं। उरांव समाज में कई महापुरुष हुए हैं, जिनके गीत आज भी गाए जाते हैं - जैसे बुधु भगत, जो अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने वाले समाज सुधारक थे; ताना भगत, जो महात्मा गांधी के अनुयायी थे; तथा लांस नायक अल्बर्ट एक्का, जिन्हें बांग्लादेश युद्ध में वीरगति प्राप्त हुई और उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

7. लोकगीतों में प्रयुक्त संचार के प्रतीक एवं संकेत (Semiotics)

उरांव लोकगीतों में विभिन्न प्रकार के प्रतीकों एवं संकेतों का प्रयोग होता है, जो कूटबद्ध संदेशों को संप्रेषित करते हैं:

श्रेणी (Category)	प्रतीक (Symbols)	संचारी अर्थ / संदेश (Significance)
प्राकृतिक प्रतीक	साल वृक्ष (सराय)	पवित्रता, देवत्व एवं सरना देवी का निवास स्थान
	कर्म वृक्ष	उर्वरता, कर्म भावना एवं सामुदायिक समृद्धि
	मोर	प्राकृतिक सौंदर्य, उल्लास एवं प्रेम की अभिव्यक्ति
	कोयल	वसंत ऋतु का आगमन, नवजीवन एवं मधुर स्वर

श्रेणी (Category)	प्रतीक (Symbols)	संचारी अर्थ / संदेश (Significance)
	नदी	जीवन की अविरल धारा एवं प्रवासन का इतिहास
रंगों के प्रतीक	लाल रंग	शुभता, वैवाहिक जीवन, प्रेम एवं सिंदूर रस्म का संदेश
	पीला रंग	हल्दी रस्म, सौभाग्य, पवित्रता एवं उत्सव का प्रतीक
	हरा रंग	प्रकृति, नई फसल, उर्वरता एवं समृद्धि का सूचक
	सफेद रंग	शांति, सत्य, सादगी एवं आत्मिक पवित्रता
आभूषणों के प्रतीक	सिकरी (गले का आभूषण)	वैवाहिक स्थिति एवं सामाजिक सुदृढ़ता का प्रदर्शन
	फुलरी (कान का आभूषण)	स्त्री सौंदर्य एवं सुरुचिपूर्ण लोक जीवन
	चांपा सुता (हाथ का आभूषण)	पारस्परिक प्रेम एवं संबंधों की प्रगाढ़ता
	बिछिया (पैर का आभूषण)	सदा सुहागन रहने का संदेश एवं वैवाहिक मर्यादा

8. उरांव युवागृह (धुमकुड़िया): लोक संचार का संस्थागत केंद्र

उरांव समाज के युवागृह, जिन्हें 'धुमकुड़िया' कहा जाता है, लोक संचार के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। छिपतला गाँव में भी युवागृह की परंपरा जीवित है। धुमकुड़िया में युवा-युवतियाँ एकत्रित होते हैं और यहीं वे गीत-नृत्य की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह स्थान न केवल मनोरंजन का केंद्र है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा का भी प्रमुख माध्यम है। यहाँ बड़े युवा छोटों को परंपरागत गीतों, नृत्यों और रीति-रिवाजों की जानकारी देते हैं। धुमकुड़िया के पुरुष प्रमुख को 'धनगर' एवं महिला प्रमुख को 'धनगिन' कहा जाता है। ये दोनों मिलकर युवा पीढ़ी के प्रशिक्षण का दायित्व संभालते हैं। इस प्रकार धुमकुड़िया उरांव समाज में अंतर-पीढ़ी संचार का मुख्य केंद्र है, जहाँ परंपराओं का हस्तांतरण होता है और सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहती है।

9. लोक संचार एवं परिवर्तन: वर्तमान परिदृश्य

9.1. आधुनिक संचार माध्यमों का प्रभाव

रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन एवं इंटरनेट ने उरांव समाज में प्रवेश कर लिया है। इन आधुनिक माध्यमों ने पारंपरिक लोकगीतों के स्थान को सीमित किया है। युवा पीढ़ी अब पारंपरिक गीतों की अपेक्षा आधुनिक संगीत और सोशल मीडिया की ओर अधिक आकर्षित हो रही है।

9.2. शिक्षा का प्रसार एवं लिखित संस्कृति

शिक्षा के प्रसार से उरांव समाज में साक्षरता बहुत तेज़ी से बढ़ी है। इससे मौखिक परंपरा पर आधारित लोकगीतों की भूमिका में कमी आई है। अब सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिखित माध्यम अधिक प्रभावी हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि उरांव जनजाति के कुछ सामाजिक नेताओं ने अपनी मौखिक परंपराओं को लिखित रूप देने की पहल की है, जो इन परंपराओं की प्राचीनता और समृद्धि का प्रमाण है। छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति की साक्षरता दर अन्य जनजातियों से सबसे ऊपर है, जो इस दिशा में सकारात्मक संकेत है।

9.3. शहरीकरण एवं प्रवासन

रोजगार की तलाश में उरांव समुदाय के लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे पारंपरिक सामुदायिक जीवन कमजोर हुआ है और लोकगीतों के सामूहिक गायन की परंपरा तथा अखाड़ा संस्कृति प्रभावित हुई है।

9.4. धार्मिक परिवर्तन का प्रभाव

जैसा कि छिपतला गाँव में देखा गया, अधिकांश उरांव लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया है। इससे उनकी पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं एवं अनुष्ठानों में परिवर्तन आया है, जिसका प्रभाव लोकगीतों पर भी पड़ा है। हालाँकि, यह भी देखा गया कि ईसाई धर्म अपनाने के बावजूद लोगों ने अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक गतिविधियों - गीत, नृत्य, त्योहार आदि को नहीं छोड़ा है। यह उरांव समाज की सांस्कृतिक चेतना की मजबूती का प्रतीक है।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

उरांव जनजाति के लोकगीत संचार के परंपरागत माध्यम के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक संचार के भी प्रभावी माध्यम हैं। इनके माध्यम से उरांव समाज ने सदियों से अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा है।

जशपुर जिले के छिपतला गाँव में किए गए इस केस स्टडी से स्पष्ट होता है कि आधुनिक संचार माध्यमों के बढ़ते प्रभाव, शिक्षा के प्रसार, शहरीकरण एवं धार्मिक परिवर्तन के बावजूद उरांव समाज ने अपनी पारंपरिक लोक संचार व्यवस्था को पूरी तरह नहीं छोड़ा है। विवाह, त्योहार जैसे सामाजिक अवसरों पर ये परंपराएँ आज भी जीवंत हैं। उरांव समाज के युवागृह (धुमकुड़िया) आज भी इन परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन के केंद्र बने हुए हैं। गाँव की पारंपरिक वास्तुकला, सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि उरांव समाज ने आधुनिकता के साथ समायोजन करते हुए भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा है।

यह आवश्यक है कि उरांव लोकगीतों की इस समृद्ध परंपरा का व्यापक प्रलेखीकरण (Documentation) किया जाए और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जाए। छत्तीसगढ़ की उरांव जनजाति की यह लोक संचार परंपरा न केवल उनकी

सांस्कृतिक विरासत है, बल्कि भारतीय लोक जीवन की समृद्धि एवं विविधता का भी प्रतीक है। इसके संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में ठोस शैक्षणिक प्रयासों की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. एक्का, फिलिप। (2011)। *उरांव जनजाति: इतिहास, संस्कृति एवं समाज।* रांची: आदिवासी शोध संस्थान।
2. गुप्ता, रामशरण। (2018)। *छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति।* रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. ठाकुर, दिनेश। (2020)। *जनजातीय समाज में संचार के परंपरागत माध्यम।* रायपुर: छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय।
4. तिर्की, जॉन। (2015)। *उरांव लोकगीत: एक सांस्कृतिक अध्ययन।* जशपुर: उरांव साहित्य परिषद्।
5. पैंकरा, श्याम। (2017)। *छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ: सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।* रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य आदिवासी शोध संस्थान।
6. मिंज, अल्बर्ट। (2015)। *कुड़ुख लोकगीत: एक विश्लेषण।* सरगुजा: उरांव साहित्य परिषद्।
7. छत्तीसगढ़ प्रतियोगिता प्वाइंट। (2024)। *Social Aspect of Chhattisgarh (छत्तीसगढ़ का सामाजिक परिदृश्य)।*
8. भारत सरकार। (2001)। *जनगणना रिपोर्ट।* नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. सिंह, के. एस. (1993)। *जनजातीय समाज: परंपरा एवं परिवर्तन।* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. विश्वकर्मा, महेश। (2019)। *लोक संचार: सिद्धांत एवं व्यवहार।* रायपुर: छत्तीसगढ़ प्रकाशन।